Sahara Samay
New Delhi
October 14, 2005

खतरे में नाकुरी

महेश जोशी

विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान रखने वाला नाकुरी क्षेत्र खड़िया खनन से उड़ती धूल के कारण बदरंग हो गया है। खनन माफिया पूरे क्षेत्र पर हावी हैं। प्रकृति से की जा रही यह छेड़छाड़ कभी भी कहर बरपा सकती है

खड़िया की झक्क सफेदी में लगातार घुल रही कालिख ने 'रंगीली नाकुरी' को बदरंग बना दिया है। नाकुरी के बदले हुए रंग मनुष्य ही नहीं यहां की हवा, भूमि और पशु-पक्षियों में भी साफ पहचाने जा सकते हैं। खड़िया खनन से बदसूरत हो चुके पहाड़ कभी भी ढहने-धंसने को आतुर दिखायी पड़ते हैं। खड़िया की धूल से सने खेत तेजी से बंजर भूमि में बदल रहे हैं। एक भयावह कोलाहल नाकुरी की फिजाओं में फैला हुआ है। कभी अपने परिवेश में मौजूद प्राकृतिक संसाधनों से आजीविका जुटा कर संतुष्ट रहने वाले ग्रामीण पैसे की अंधी दौड़ में एक दूसरे को पछाड़ने की होड़ में हैं। खड़िया के जरिये आया अकूत धन अपने साथ जुआ, शराब और बेलगाम उपभोक्तावाद जैसी बुराइयों को भी लेकर आया है। बाजार की नयी संस्कृति ने अपने में ही रमे हुए इस क्षेत्र के सामाजिक जीवन को तहस-नहस कर दिया है। खड़िया के जरिये धन कमाने की प्रतिस्पर्द्धा ने सामाजिक रिश्तों को तो प्रभावित किया ही, पहाड़ी जनजीवन की पहचान रही तटस्थता की भावना को भी समाप्त कर दिया है। लगातार विचलनों का सामना कर रहा इस क्षेत्र का नाजुक भू-तंत्र, तेजी से संचित हो रहे सामाजिक-आर्थिक तनाव और खड़िया की धूल के साथ वातावरण में घुल रही खतरनाक बीमारियां हिमालय की गोद में बसे सुंदर नाकुरी इलाके के लिए अभिशाप सिद्ध हो रहा है।

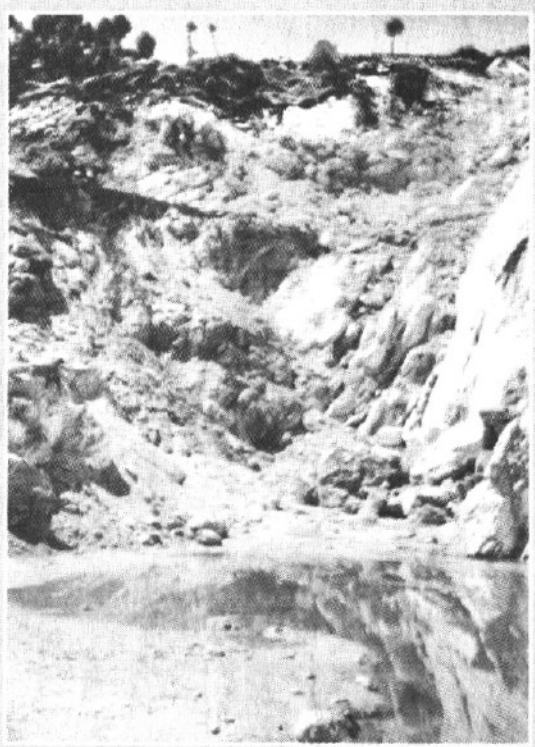

प्राकृतिक दृष्टि से खूबसूरत बागेश्वर जिले के नाकुरी क्षेत्र में खड़िया खनन से उत्पन्न पारिस्थितिकीय संकट

उत्तरांचल के बागेश्वर जिले के नाकुरी क्षेत्र को इसकी प्राकृतिक सुंदरता, आत्मनिर्भर ग्रामीण जीवन और अनूठे लोकोत्सवों के कारण 'रंगीली नाकुरी' के नाम से जाना जाता है। करीब बीस साल पहले तक नाकुरी के जनजीवन में कोई हलचल नहीं थी। प्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित ग्रामीण जीवन की निरंतरता सदियों से बनी हुई थी। १९८२ में नवनिर्मित बागेश्वर-धरमघर मोटर मार्ग पर गाड़ियां चलने के साथ ही यहां की धरती में स्थित खड़िया के विशाल भण्डारों ने खनन व्यवसायियों को इस ओर आकर्षित किया। शुरू में कुछ स्थानीय लोगों ने बाहरी ठेकेदारों के साथ मिल कर खड़िया दोहन का काम किया, लेकिन धीरे-धीरे खड़िया व्यवसायियों के 'नेटवर्क' ने शासन-प्रशासन से मिल कर पूरे नाकुरी क्षेत्र को अपने कब्जे में ले लिया। स्थानीय प्रभावशाली लोगों के अलावा बागेश्वर, अल्मोड़ा, नैनीताल व हल्द्वानी के खनन व्यवसायी तो यहां पहुंचे ही, कोलकाता और कानपुर के व्यापारी भी खड़िया पर हाथ साफ करने लगे। इन लोगों ने मिल कर यहां एक ऐसे तंत्र का निर्माण कर लिया जिसने स्थानीय पारिस्थितिकी को तो रौंदा ही, सीधे-सादे ग्रामीणों को भी पैसे की लत लगा दी। पैसे के लालच में ग्रामीणों ने पहाड़ी फसलों से लदे रहने वाले खेत खोद डाले। यही नहीं वन पंचायतों के जंगल खड़िया खदानों की भेंट चढ़ गये। जो लोग इस नये ताने-बाने में फिट हो गये वे रातोंरात मालामाल हो गये और जिसने विरोध करने की हिम्मत जुटाई उन्हें खनन माफिया का कोपभाजन बनने से उसकी कीमत चुकानी पड़ी।

नियम-कानून और पर्यावरण के कायदों को ताक पर रख कर किये जा रहे खड़िया खनन के दुष्प्रभाव अब तेजी से सामने आने लगे हैं। रीमा क्षेत्र के सुरकाली ग्राम सभा स्थित जूनियर हाईस्कूल उद्यम स्थल का भवन भूस्खलन की चपेट में है तो उधर रैखोला गांव के हरीश सिंह रैखोला की २० नाली धान की फसल से लहलहाता खेत मलबे में दफन हो गया। ऋण लेकर बनाया गया मकान-दुकान खननजनित भूस्खलन की चपेट में है। जगह-जगह खड़िया खनन से बने गहरे गड्ढे व रौखड़ों से तेज वर्षा में बह कर जा रहा मलबा गडेरावासियों की लहलहाती फसल को नेस्तनाबूत कर रहा है। नाकुरी पट्टी के लोग खड़िया खनन से क्षत-विक्षत जमीन के धंसने की आशंका से दहशत में हैं। उनके पास अब पश्चाताप के अलावा कोई चारा नहीं रह गया है।

(शेष पेज ३० पर)

174

खतरे में नाकुरी

गौरतलब है कि नब्बे के दशक में बागेश्वर जिला मुख्यालय से पांच किलोमीटर दूर बालीघाट-दोफाड़-रीमा-धरमघर मोटर मार्ग निर्माण के साथ ही इस क्षेत्र में खड़िया व्यवसायी सक्रिय हो गये थे। खड़िया के साथ ही धीरे-धीरे इस क्षेत्र में जुआ व शराब का प्रचलन बढ़ने लगा। खड़िया व्यवसाय से हो रहे भारी मुनाफे को देखकर एन.एस. कारपोरेशन (कोलकाता) के बाद कटियार माइंस (कानपुर) के अलावा हल्द्वानी, अल्मोड़ा व क्षेत्र के कई लोग इस व्यवसाय में कूद गये। वर्तमान में तुपेड़, चिड़ंग, दोफाड़, छातीखेत, किरौली, सुरकाली, रैखोला, बैकोड़ी, सनेती, किड़ई आदि गांवों व इनके तोकों में वैध-अवैध रूप से खड़िया खनन जारी है। प्रकृति से किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ यहां भविष्य में तबाही मचा सकती है, लेकिन यह सब जानने के बावजूद यहां खनन कार्य बदस्तूर जारी है। सुरकाली गांव के दिनेश सिंह गुडिया बताते हैं कि खड़िया खनन ने यहां के लोगों को पंगु बना दिया है। जिन काश्तकारों के खेतों में खड़िया निकल रही है उनका ध्यान खेती व पशुपालन से हटने लगा है। लाख टके का सवाल यह है कि जब खेतों से खड़िया निकलना बंद हो जाएगा तब ये लोग क्या करेंगे? जूनियर हाईस्कूल उद्यम स्थल की ओर इशारा करते हुए वह बताते हैं कि भूस्खलन से स्कूल का शौचालय ढहने की स्थिति में है। स्कूल मैदान से नीचे व आसपास के इलाके को खड़िया खनन से खतरा उत्पन्न हो गया है।

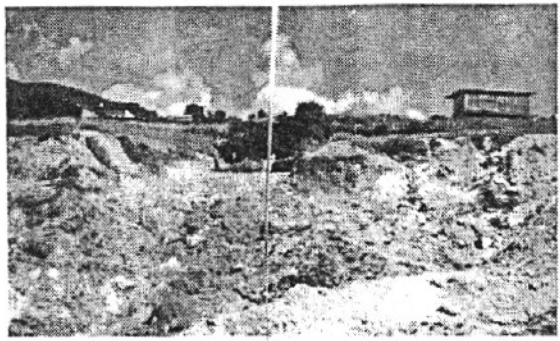

खड़िया खनन से तबाही के मुहाने पर पहुंचे नाकुरी इलाके के गांव

सुरकाली के ग्राम प्रधान योगेश सिंह हरडिया का कहना है कि खनन से कृषि भूमि खत्म होती जा रही है। खनन में लगे नेपाली मजदूरों द्वारा खुले में व जलस्रोतों के आसपास गंदगी (शौच) करने से वातावरण प्रदूषित हो रहा है। खनन से कुछ लोगों को तत्काल रोजगार तो मिला है पर स्थायित्व नहीं है। द्याली-कुरोली के युवा दुकानदार मोहन सिंह भौंरियाल खड़िया खनन की खिलाफत करते हुए कहते हैं कि इससे फायदे कम नुकसान ज्यादा हैं। खनन से सिंचाई गूल, रास्ते, सड़क, वनावरण व जलस्रोत सभी कुछ प्रभावित हो रहे हैं। वे स्यूनी गांव स्थित नौले का जिक्र करते हुए बताते हैं, 'नीचे खड़िया खनन होने से नौले का पानी खड़िया खान की ओर रिसने लगा है। कई अन्य जलस्रोत भी प्रभावित हो गये हैं। खड़िया खानों से उड़ने वाली धूल व सीजन में माल से लदे ट्रकों के दौड़ने से जो धूल उड़ती है उससे कृषि भूमि प्रभावित होने के साथ ही आंखों की बीमारी, श्वांस व चर्म रोग की शिकायतें भी बढ़ रही हैं।

ग्राम पंचायत बैकोड़ी के प्रधान कुंजर सिंह रैखोला मानते हैं कि खड़िया खनन से क्षेत्र का भविष्य दांव पर लग गया है, लेकिन अब इसे रोक पाना मुश्किल है। इस धंधे में राजनीतिक दलों से जुड़े स्थानीय लोगों के आने से दिक्कतें और बढ़ने लगी हैं। बाहर वालों का विरोध किया जा सकता था पर अपने ही लोग नियमों के विरुद्ध कार्य कर रहे हों तो स्थिति बिगड़नी ही है। रैखोला गांव के हरीश सिंह रैखोला गरीब परिवार से हैं। उनके पुरजोर विरोध के बावजूद उनके खेत के नीचे जबरदस्त तरीके से खड़िया खनन कर दिया गया। वे बताते हैं, 'मेरा २० नाली का खेत मलबे के साथ बह गया और पांच नाली का खेत रास्ते की भेंट चढ़ गया। मैंने खनन का विरोध किया तो दबंग लोगों ने मेरे संगठन के साथियों को लालच व डरा धमकाकर तोड़ दिया और उल्टा अब मुझे ही धमकी देने लगे हैं। इसकी सूचना पटवारी को देने पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।' अब डरा-सहमा हरीश भविष्य को लेकर चिंतित है। क्षेत्र का व्यापक सर्वेक्षण करने के दौरान लोगों से चर्चा करने के बाद यह निष्कर्ष निकला कि खड़िया खनन से हो रहे व्यापक नुकसान को नजरअंदाज कर राजस्व प्राप्ति के बहाने शासन-प्रशासन का निरंकुश खड़िया व्यवसायियों पर कोई अंकुश नहीं है। खड़िया खनन से स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव तो पड़ा ही है सामाजिक रिश्तों में भी कटुता बढ़ी है। यही नहीं इलाके में शिक्षा का स्तर भी निरंतर न्यून होता जा रहा है। बिना परिश्रम किये धन उपलब्ध होने से भौतिक संसाधनों की ओर लोगों का ध्यान ज्यादा है। यदि स्थितियां ऐसी ही बनी रहीं तो भविष्य में इस क्षेत्र में व्यापक तबाही की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। जाहिर है यहां जल-जंगल-जमीन के प्रभावित होने से भावी पीढ़ी के लिए जीना आसान नहीं रह जाएगा।